Udghatan - Vishwa Nirmala Prem Ashram

Date	:	27th March 2003
Place	:	Noida
Type	:	Seminar & Meeting
Speech Language	:	Hindi

CONTENTS

I Transcript

Hindi	01 - 04
English	-
Marathi	-

II Translation

English	05 - 07
Hindi	-
Marathi	08 - 10

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

आप लोग मुझे हिन्दी में बोलने की आज्ञा दें।

अपने देश में जो अनेक प्रश्न हैं, उसमें सबसे बड़ा प्रश्न है कि यहां पर औरतों को और आदमियों को अलग-अलग तरीके से देखा जाता है पता नहीं ये कैसे आया, क्योंकि अपने शास्त्रों में तो लिखा नहीं है। कहते हैं शास्त्रों में कि:

यत्र पूज्यन्ते नार्या--नारियां जहां पूजनीय होती है

तत्र रमन्ते देवता 'तो पता नहीं कैसे हमारे देश में इस तरह की स्थिति सम्पन्न हुई है, इससे औरतों के प्रति कोई भी आदर नहीं है। विशेषत: मेरा विवाह यू.पी. में हुआ और मैं देखकर हैरान हुई कि यू.पी. में घरेलू औरतों का कोई स्थान ही नहीं है। उनमें और नौकरानियों में कोई फर्क नहीं है। यह इस प्रकार क्यों हुआ और क्यों हो रहा है? क्योंकि लोग उस ओर जागृत नहीं है और कभी-कभी देख कर तो रोना आता है। जिस तरह से औरतों को छला हैं, घर से निकाल दिया, कोई वजह नहीं, यूंही घर से निकाल दिया और ऐसे बहुत सारे हमने जीवन में अनुभव लिए और जिसकी वजह से अत्यन्त व्यथित हो गए। समझ में नहीं आता था कि इस तरह से क्यों औरतों को सताया जा रहा है और इनके रहने की भी व्यवस्था नहीं। जब घर से निकल गई तो उनको देखने वाला भी कोई नहीं है। बाल बच्चे ले करके निकल आई थी बेचारी। वो लोग तो हैं निराश्रित पर बच्चों को भी बिल्कुल बुरी तरह से निकाल देते हैं। यह अपने यहाँ की व्यवस्था किस तरह से बदल सकती है। इसका कोई इलाज है या नहीं? मैंने बहुत बार सोचा कि इसके बारे में लिखना चाहिए, पर लिखने से कुछ नहीं होगा। इसके लिए कोई व्यवस्थित रूप से कोई इन्तजाम करना होगा, कोई व्यवस्था करनी होगी, और एक तरह से बड़ा दिल कचोटता था। ऐसी अनेक-अनेक औरतें देखी हमने जो आज रास्ते पर भीख मांग रही हैं। लोगों ने बताया कि अच्छा तरीका है भीख मांगने का। मैंने कहा कि भाई तुमको मांगना पड़े तो पता चले। औरतों के प्रति एक अत्यन्त उदासीन प्रवृत्ति जो अपने देश में आ गई है मुझे उससे तो रोना ही आता था। और इसीलिए मैंने यह ठान लिया था कि इनके रहन-सहन का, इनके खान-पान का, इन बेचारी औरतों का कुछ न कुछ इलाज तो करना चाहिए। वो लोग रास्तों में भीख मांगती हैं, हर तरह का काम करती हैं, उनको मैंने घर में बुलाया, उनसे बातचीत करी तो कोई कारण नज़र नहीं आता। आदमियों को कोई औरत अच्छी लग गई उसकी (पत्नी) छुट्टी करो, दूसरा कुछ बहाना करके औरत को घर से निकाल दो। पता नहीं क्यों? औरत एक महान जीवन है, उसी से सारा संसार खड़ा होता है। उसी से अपने देश में हजारों बाल-बच्चे इस संसार में आते हैं। पर उनके प्रति इस तरह बेकद्री से लोग पेश आते है कि सहते-सहते औरत भी पागल हो जाए। पर नहीं, वो अपने बच्चों की वजह से बड़े हिम्मत से जीती हैं। लेकिन करें क्या उसके पास और खाने का ज़रिया नहीं, कोई तरीका नहीं, तो वो क्या करे, कहां जाए, किससे भीख मांगे? कोई उनको दरवाजे में भी खड़ा नहीं करता। इसका कोई इलाज मुझे दिखाई नहीं दिया। इसीलिए मैंने बहुत सोचा कि सबसे बड़ा काम, अगर कुछ है, तो इन औरतों के लिए कोई स्थान बना देना है। मैंने यही सोचा कि यहां आ करके वो सीख लेंगी, कुछ न कुछ काम सीख लेंगी। इसके अलावा यह लोग मालिश करना सीख सकती हैं, इसके अलावा यह लोग छोटे-छोटे अपने होटल जैसे बना सकती हैं। पर उनकी सहायता करने के लिए कोई चाहिए, कोई स्थान चाहिए, और उनको समझाने के लिए कोई चाहिए। इसी ख्याल से मैंने यह आश्रम बनाया है और इसमें सभी के प्यार को ललकारा है, सारे विश्व के प्यार को ललकारा है कि सब लोग प्यार से इसे देखें। इन बिचारी औरतों का कोई दोष नहीं

हैं, वो जो दर-दर में भीख मांग रही हैं इसका उत्तरदायित्व हमारे समाज का है। बहुत दुख होता है, एक औरत के नाते मुझे बहुत रोना आता था देख-देख के और यह जब बनने लगा तो मैंने कहा कि किसी तरह से यह पूरा हो जाए। और इसमें मेहनत करी काफी, इसका डिजाइन भी हमने बनाया। इसकी विशेषता यह है कि इसमें जो आपको सफेद रंग दिख रहा है यह खराब होने वाला नहीं। एक अजीबो गरीब तरीके से बनाया है, यह इटली में मैंने सीखा था। इटली में मैंने सीखा था कि ऐसा रंग बनाना चाहिए कि जो छूटे न और मुझे इसका मालूम है (तकनीक) और उसको इस्तेमाल करने से देखिए कितना सुन्दर सफेद रंग बन गया। यह कभी खराब नहीं होगा, कितना भी इस पर पानी आ जाए, कुछ हो जाए, कभी खराब नहीं होगा। यह मैंने एक experiment की तरह से, लेकिन यह चीज है बड़ी अच्छी। क्योंकि अपने देश में पता नहीं क्यों इस तरह के लोग चीज नहीं बनाते। और इस तरह की चीज बनाना कोई मुश्किल नहीं। मैंने कितनों से कहा कि आप इसको इस्तेमाल करें, सो यही बात हुई कि कौन करे तवालत, कौन करे यह आफत। इसमें कोई तवालत नहीं है, कोई आफत नहीं है। पर भारत देश में एक और प्रथा चल पड़ी है कि जैसे चले वैसे चलने दो। फिर आप क्या बात कर सकते हैं। यहां एक से एक विद्वान हो गए, संस्कृत के पंडित हो गए, इतना ज्ञान दे गए, पर लोगों को इसका बिल्कुल अंदाज नहीं है। वो जानते नहीं कि कितने महान देश में आप पैदा हुए हैं और इसके अंदर कितना ज्ञान दे गए। यहीं औरतों को आप बिल्कुल कुछ नहीं समझते, औरतों को तो बिल्कुल जैसे कोई भिखारियों जैसे रखा जाता है। पति जो है वो शराब पियेगा और बीवी को मारेगा, और मारेगा नहीं तो भी उसको कुछ सहुलियत नहीं है, कोई सुविधा नहीं बेचारी को। वो किसी तरह से भी रह लेगी। हाँ अगर कोई रईस की लड़की होगी तो ठीक है, नहीं तो बहुत सताते हैं। और इस तरह से कितनी ही औरतें अपने आप पिछाड़ी गई हैं। उसमें से कुछ तो घर से निकल खड़ी हो गई और भीख मांग रही हैं। और कुछ ऐसी भी है जो घर में ही रोती रहती हैं और किसी तरह से अपना जीवन काट रही हैं। पता नहीं समाज में इसके प्रति अभी, खासकर इधर, खासकर अपने यू.पी. में, इध र ध्यान नहीं गया। महाराष्ट्र में एक बात अच्छी हुई, वहां दो-तीन समाज सुधारक निकले। उन समाज सुधारकों ने बहुत कार्य किया। उनकी वजह से वहां पर यूनिवर्सिटीज़ बन गईं। औरतों को बहुत अच्छा शिक्षण मिला और लोग देखने लगे कि औरतों में भी बहुत गुण हैं।

अब यह हमने स्कूल तो बनाया है और आप लोगों से यही बिनती है कि आप लोग हमें बताएं कि इसमें हम क्या कर सकते हैं। कौन-सी, कौन-सी शिक्षा हम दे सकते हैं। ऐसे हम लोगों ने तो बहुत सोच लिया है। पर तो भी आप सूक्ष्म हैं, आप हमारे पास खबर भेजें कि और क्या-क्या हम इन औरतों के लिए कर सकते हैं। परदेस में हमने देखा वहां कायदा-कानून ऐसा है कि कोई भी औरतों को इस तरह से सता नहीं सकता। ऐसी उनकी दुर्दशा नहीं है। यह अपने ही देश की विशेषता है जहां पर कि औरतों की दुर्दशा होती है। परदेस में हम बहुत साल रहे, जाते-आते रहे तो यह फर्क मुझे मालूम हुआ। बड़ा महसूस हुआ कि यहा पर देखिए कि एक औरत की कोई कीमत ही नहीं है, वही बच्चे पैदा करती है, वही संवारती है। और भारतीय नारी तो वैसे भी बड़ी सुन्दर होती है, बहुत कार्यक्षम, बहुत दक्ष और बहुत ही ज्यादा मोहब्बत वाली होती है। यहाँ की माताएं तो मशहूर हैं। पर हमारे यहां उनके लिए कोई प्रेम-आदर नहीं। पता नहीं ऐसा क्यों? हाँ वहाँ ज़रूर है औरतों ने ही अपना मंच बनाया हुआ है। उन्होंने अपने लिए यह सब यह स्थापित कर लिया है। और इस देश में उनको पूछने वाला कोई नहीं। इसी ख्याल से हमने यह छोटा सा आश्रम बनाया है कि इस आश्रम में जो लोग आएं लड़कियां-औरतें, उनको दे दिया जाए ज्ञान, अपने पांव

पर खड़ा होना और सहज-योग भी उसके साथ। गर वो इसको प्राप्त कर लें तो वो बहुत अभिमान के साथ और गौरव के साथ रह सकती हैं। यहीं आश्रम में हम बहुत सी इंडस्ट्रीज़ भी बना सकते हैं, बहुत से खाने-पीने की चीज़ें बना सकते हैं, और बहुत से उच्च तरह का शिक्षण भी दिया जा सकता है। यह तो देखा जाएगा कि किन औरतों में इसकी क्षमता है, कितनी औरतें इसमें उठ-खड़ी होती हैं। कभी-कभी हमने देखा है कि ऐसी ही जगहों से जहां पर औरतों को कुचला गया है, बड़े-बड़े स्थानों में औरतें उठ खड़ी हुईं। पर हमको उनकी मदद करनी होगी, हमें देखना होगा। क्योंकि जो हो रहा है वो अपने समाज के लिए बहुत हानिकारक है, और बड़ी दुष्टता की निशानी है। उस तरफ हमारा ध्यान ही नहीं है, पता नहीं कैसे? उधर ध्यान देना बहुत जरूरी है। और यह जो औरतों की तरफ हमारा, कहना चाहिए कि, उनके लिए जो हमारे हृदय में जो श्रद्धा होनी चाहिए वो नहीं है। बिल्कुल नहीं है और हम बुरी तरह से उनको सताते भी हैं, पीटते भी हैं, बात-बात में मारते भी हैं। ऐसी-ऐसी मेरे पास कहानियाँ हैं कि मैं उनको अभी गर सुनाऊं तो आप रो पड़ियेगा। मैं बहुत रो चुकी हूँ अब चाहती हूँ कि कुछ न कुछ मार्ग ढूंढा जाए और इसलिए यह छोटा सा प्रयास किया है। इसको बढ़ा भी सकते हैं बाद में और फिर यहाँ से जो औरतें ठीक हो कर जायेंगी, जो यहाँ से, कहना चाहिए कि, परिपक्व हो कर जायेंगी, वो कुछ न कुछ अपनी जिन्दगी में करेंगी। इतना ही नहीं वो अपने को संभाल सकती हैं। अपने बच्चों को भी संभाल सकती हैं और बाइज्जत अपनी जिन्दगी निभा सकती हैं। यह बहुत जरूरी है। उनको कितना भी आप शिक्षण दीजिए, कुछ दीजिए, घर में उनकी अगर इज्जत होती नहीं तो वो क्या करेंगी बेचारी। उनकी पढ़ाई-लिखाई की यदि इज़्ज़त नहीं होती तो वह क्या करेगी? इसलिए कोशिश यही करनी है कि इनको इस लायक बना दिया जाए, इन औरतों में यह आ जाए हुनर कि वो स्वाभिमान के साथ अपनी जिन्दगी काट सकें। वो भी इन्सान हैं, वो कोई जानवर तो नहीं है। वो भी इन्सान हैं और इन्सान की पदवी उनको देना यह नितान्त आवश्यक बात है। गर हम यह बात नहीं समझेंगे, पहले तो अपने घर-द्वार से शुरु करें, वहीं से देखें कि क्या से क्या चल रहा है। हमने तो बहुत नज़दीकी से देखा है और सिवाए रोने के और कोई मार्ग नहीं था।

मैं जान करके हिन्दी में बोल रही हूँ क्योंकि परदेसी लोग हैं, इनके सामने अपने देश की औरतों की निन्दा कैसे करें? इन लोगों को देश के प्रति बहुत अभिमान है। जब भी आते हैं तो पहले सर को जमीन में छू करके अभिनन्दन करते हैं। इतना मानते हैं कि मैं आपसे बता नहीं सकती। मैंने इनको कभी नहीं कहा। अपने ही विचार से, अपनी ही श्रद्धा से यह समझते हैं कि यह तो नन्दन वन है और उनको अभी यहाँ की दुर्दशा का पता नहीं है इसलिए मैं नहीं चाहती कि इनको पता चले, अपने देश की बुराई करने में क्या रखा है? पर जो बुराई है उसे निकालना चाहिए, उसको हटाना चाहिए। यही बात मैं आप सब से कह रही हूँ। वहां औरतों का मान होने का कोई विशेष कारण तो है नहीं, पर वहाँ के कायदे-कानून ऐसे बन गए थे कि कोई भी औरत कहीं पड़ी हो, कैसी भी हो, कहीं हो, उसकी बेइज्ज़ती नहीं होती इसलिए हमें भी चाहिए कि हम भी समझें कि यह बहुत बड़ी बात है कि हम भी अपनी औरतों का मान करें और उनके प्रति श्रद्धा रखें। हमने तो इतनी भयंकर चीज़ें देखी हैं कि विश्वास नहीं होता कि कोई इन्सान दूसरे इन्सान को इस तरह से छल सकता है, सता सकता है परेशान कर सकता है! एक अजीब ही तरह की गुलामी है। हम तो अंग्रेज़ों की गुलामी से तो छुटकारा पा गए लेकिन हमारे समाज में जो इस तरह की गुलामी है उससे छुटकारा पाना बहुत जरूरी है। हमारे देश की महिलाएं, मेरे ख्याल से कम से कम 70 फीसदी है और बाकी आदमी लोग हैं, इतना होते हुए भी आदमियों में बड़ा

घमंड है। अपने को पता नहीं क्या समझते हैं और सोचते हैं कि हम चाहे जो भी कर लें वह ठीक हो जाएगा ऐसा नहीं है। एक औरत भी स्त्री है एक समाज का बड़ा भारी घटक है। उनके साथ जो भी आप ज़्यादती करिएगा उसका फल आपको और आपके बच्चों को भोगना ही पड़ेगा। अब हम लोग देखते हैं कि हमारे बच्चे भी खराब हो रहे हैं क्योंकि उन पर नियंत्रण कौन करे, माँ को तो कोई अधिकार नहीं और बाप को फुर्सत नहीं, तो बच्चों को ठीक कौन करेगा, और कौन देखेगा? यह तो घर-घर की कहानी है। मैंने तो देखा है कि यू.पी में देखिए कि कॉलेज में जाने वाले लड़के दिन-दहाड़े कॉलेज से छुट्टी पा करके और किसी भी रेलगाड़ी में चढ़ जाएगें और वहां लूट- खसोट करेंगे और उनकी माँ लोग करेंगी क्या? वो तो कुछ बोल नहीं सकती। उनको तो कोई सुनता ही नहीं। इस चीज़ को बदलना नहीं चाहिए और अपने घर की जो औरतें हैं उनकी सामाजिक व्यवस्था उसकी उन्नति करनी चाहिए और उसकी ओर विचार करना चाहिए।

वो अपने घर में जब शुरू होगा तो और भी जगह हो जाएगा। मुझे इसके लिए नितान्त-नितान्त तकलीफ होती है। हम तो क्या बताएं आपको, सब बेकार है। सहन नहीं होता। जब यह इमारत बनने को हुई हमने कहा कुछ भी करो, पैसा-वैसा हम दे देंगे, बिल्डिंग बनाओ किसी तरह से और जब यह बिल्डिंग बन गई तो मुझे बड़ी खुशी हुई। किसी तरह से कम से कम ऐसी एक चीज बनी है, ऐसी एक चीज़ बन गई कि जिससे औरतों की तरफ ध्यान आकर्षित होगा। और लोग उनको कुछ तो उनकी मुहब्बत इज़्ज़त से रखेंगे। यह दुर्दशा मुझे नए तरीके से क्या बताना है। जो है सो है। पर आप लोग अपने व्यक्तिगत जीवन में देखें कि आपके यहाँ औरतों का क्या हाल है। आपकी माँ, बहनों का क्या हाल है। और उसके बाद समाज की ओर दृष्टि करें। यह ठीक हो जाने से आपका देश बहुत उन्नति पर पहुँच जाएगा, बहुत ऊँचा उठ जाएगा। जहाँ पर औरत निर्देश करती है और संभालती है, वहाँ पर बड़े महान-महान लोग हो गए। पर यहाँ जिस तरह से घटित हो रहा है, इस छोटे से प्रयास से आशा है, मुझे आशा है, कि कुछ तो हालात ठीक होएगें। इतने दिन से मैं जिस चीज़ के लिए रोती रही, परेशान थी, उसकी ओर सबका ध्यान जाए और सब लोग उस ओर देखें ।

सहजयोग से आप आत्मा को प्राप्त होते हैं, आप आत्मा को जानते हैं, पर सबके तरफ आपकी जो दृष्टि है उसमें करुणा होनी चाहिए। आत्मा को प्राप्त करके आपके अन्दर करुणा नहीं हुई तो क्या फायदा? करुणा होनी चाहिए और उस करुणा में आप देखिए, चारों तरफ आप देखकर परेशान हो जाएगे कि यह माँएं और बहनें किस दुष्चक्र में फंस गई हैं। इसके लिए आपसे विनती है मेरी कि आप आस-पास आंख घुमा कर देखिए, घर-बाहर देखिए और औरतों की जो स्थिति बनाई हुई है उसे व्यवस्थित करने का प्रयत्न करें। हमने तो छोटा सा एक प्रयास किया है पर आप लोग बहुत कुछ कर सकते हैं। इसलिए मैं आप सबसे विनती करती हूँ कि जैसा आप मुझे प्यार करते हैं ऐसा ही आप अपनी माँ को और अपनी बहनों को प्यार करें

अनन्त आशीर्वाद।

ENGLISH TRANSLATION

(Hindi Talk)

You must allow me today to speak in Hindi Language.

In our country there are many problems. One of the biggest problems is that here men and women are seen from different angles or different points of view. I don't know how this happened because it is not written so in our Shastras (Holy Books). It is written in the Shastras that "Yatra pujyante nari" (Sanskrit) meaning that where women are worshipped, "Tatra ramante devata" : there reside the Gods. So I do not know how it is that in our country such a situation has culminated where there is no respect toward women, especially here in U.P.(Uttar Pradesh). I was married in UP and I was surprised to see that in UP housewives do not have any status. There is no difference between them and the domestic servants. How this happened and why is this still happening?? – Because the people are not awakened toward this. Sometimes I feel like crying seeing how they have taken advantage of women. They have thrown them out of home, without any reason ! Just like that, thrown out of house!!

And I have had so many experiences in my life which deeply aggrieved me. I did not understand why they are maltreating women? And there are no arrangements to house them! And when they are thrown out of their house there is nobody to take care of them. Poor women!, they were thrown out along with children. They (women) themselves become shelterless but children as well are so cruelly thrown out (of house). How this situation can be changed?? Is there a cure for it or not?? I thought so many times that I should write about it. But writing only does not help. I thought that for this something had to be done, some arrangement had to be made in an organized manner. My heart used to ache at seeing so many women begging in the streets. Many people said what a good way to make money by begging! I said if you had to go begging then you will realise!

I felt like crying upon seeing such insensitivity toward women's problems in our country. And because of this I had decided that something had to be done to house them, to feed them and to do something for these poor women. They beg in the streets, do all kinds of works. I called them to my home and talked to them. I could not find any particular reason. Husband liked some other woman so threw her out. Make any excuse and throw her out of house. Don't know why?

Woman is a great life-giver. The whole world is because of her. It is because of her that thousands of children are born in this country. But such a disrespect is shown toward them that any woman would become lunatic tolerating all this. But no, she lives very courageously because she has to take care of her children. But what can she do? She doesn't have any means to have food. There is no way out! Where should she go? Where to beg? Nobody lets them come even near to their doors! I did not see any cure for this. So, I thought a lot about it and decided that if any substantive work is to be done, it is to build some shelter for them. I thought that after coming here they will learn something, learn to do some work or other. They can learn to do massage. Besides, they can run some small hotel restaurant. But they need some help, some place to learn this and they need somebody to teach them. Keeping this in view, I have made this Ashram and have beckoned to everybody's love, I have beckoned to the whole world's love that everybody sees this with love that these women have not committed any crime if they are begging at our doors. It is the responsibility of our society.

I felt very aggrieved and being a woman I felt like crying at seeing all this. When the construction of this Ashram started, I said that would be good if somehow it gets completed fast. I worked very hard. I designed this Ashram.And special about this is that the white colour that you see will never get spoiled. It is made with a special technique. I learnt this in Italy. And I learnt in Italy that one could make such a colour which never fades, and I know this technique and see how beautiful this white colour has come out by using this technique and will never got spoiled. No matter how much water

pours, whatever happens, it never gets spoiled. I have done this as an experiment. But this is really a very good thing. (…somebody adjusts microphone. She says thanks).And it is not difficult to make this. I said to so many people that you should use this thing. But they all thought who would make effort', who would take trouble? But there is no trouble, no efforts. In our country there is this bad habit developed that if you do one thing in a way then you keep on doing it the same way. So what to say ! There have been so many great sages one after the other. So many pandits of sanskrit. They diffused so much knowledge. But people do not realise this at all. They don't know and don't realise that they are born in such a great nation and there is so much pure knowledge in this country. But they do not respect women. They keep them like beggars. Husband will drink alcohol and beat his wife! Even if he does not beat her up, there is no comfort for her, no easy life for her. She somehow lives her life. Yes, if she is from a rich family then it is alright, otherwise she is maltreated a lot. And in this way so many women have suffered. Some of them got fed up and left their homes and started begging and there are many who keep on suffering and rotting at home and somehow carry on with their lives.

I don't know why there is no attention paid to this aspect of our society. Especially here, here in UP. In Maharashtra one thing good happened. There have been 2-3 social reformers and these social reformers worked a lot and because of them universities were established and women got very good education and people started to see that women also have many good qualities.

Now we have built this school and there is only this request to you that you should tell us what else we could do here? What education we can diffuse here? We have already thought about lots of things but still you should tell us what else we could do for these women.

Abroad I have seen that there nobody can maltreat a woman. Here they are subjected to such cruelty. It is specially in our country that women are so much mistreated. I have lived abroad for so many years. I keep on going there. I see this big difference and feel it a lot. I see that here there is no value of a woman. It is she who creates children and takes care of them. And an Indian woman is anyway so beautiful, so docile, very dextrous and full of love. Mothers of this country are famous. But here we do not have any love or respect for them. I don't know why it is like this?

Yes, abroad it is definitely like this that women themselves have created a forum for themselves. They have established themselves as a force. But in our country nobody cares for women. With this view, I have built this small Ashram where women or girls who come here if they are given some “knowledge” to be self-reliant along with the knowledge of Sahaj Yoga. If they can grasp this then they can live their life with great dignity and self-respect. In this ashram we can build lots of industry. Can make lot of different kind of eatables, and also can give higher education. This we will see that how many women will have this kind of capacity (to absorb higher education).

How many will come up? Sometimes I have seen that from the very same places where the women have been crushed (suppressed) so much, there come up such great women. But we will have to help them, look after them. Because what is happening is very destructive for our society and it is a sign of cruelty. And we have not put any attention to this aspect.

I don't know why! It is very necessary to put our attention to it. And I must say this that the Shraddha that we should have in our hearts toward women is not there, not at all there. And we mistreat them, beat them up. I know so many such stories that if I recount them to you, you will start crying. I have already cried a lot . Now I want that we should find out some way and in this direction I have made this small effort. We can enlarge this later and the women who will leave this Ashram, let us say that the women who will leave this ashram matured, they will definitely do something in their lives. Not only they can take care of themselves, but also of their children and can live a dignified life. It is very necessary, whatever education you give them if they are not respected at home then what will the poor thing do? If her education is not respected then what will she do? Here we have to try that these women are made able and they have the education so that they can live their life in a dignified way. They also are human beings. They are not animals. And to give them status of human beings is

very very necessary. We should understand this. First let us start from our home. See from there itself what is happening. I have seen it all from a very close range myself and I did not see a way out but for crying for them. (…. microphone being adjusted. You can't listen anything. Who can't hear please raise hand. Everybody can listen!) I am deliberately talking in hindi because how can I talk bad about women of our country before these foreigners(… Clapping). They respect our country so much. Whenever they come here, they first bow down and touch the earth with their foreheads, and they respect our country so much that I can not even describe it to you.

I have never asked them anything to do so. But do not know how they from their own Shraddha in their hearts they do it. They feel that it is “Nandanvan”- the garden of paradise. But they do not know about the bad condition of our country. So I do not want that they be told all this. What use is it to criticise our country. But it is necessary to root out the evil if it is there in our country. It must be absolutely cleaned up. This is what I am telling all of you. There is no special reason that the women abroad get respect., but the laws there developed in such a way that no woman , whether she is educated or not, can be insulted. So, we should also understand that it is a very great thing that we should respect our women and we should have Shraddha towards them. I have seen so many terrible things that I can not believe that any human being can mistreat, be cruel and torture another human being in such a way. It is a strange sort of slavery. We got rid of the slavery from the English but it is very necessary to get rid of this kind of slavery in our society.

The women of our country, I think, constitute 70 % of the population . and rest are men. Even after this the men are so arrogant. Don't know what they think of themselves! And they think that they can do whatever they like and it will be alright. But it is not so. A woman is also an important part of the society. If you commit any sort of excesses on her, you and your children will have to pay for it. Now we see that now our children are also getting spoiled. Because who controls them? Mother does not have any right and father does not have any time. So who will take care of their children. This is now becoming a story of each and every home. I have seen that in UP the college going boys, in broad daylight, after finishing their classes board any train and misbehave with women in train. What can their mothers do? They can not say anything. Nobody listens to them. This we should change. And we have to put our attention to improve the social status of our women at home. If we improve in our homes, then it will improve outside also.

And I feel troubled for this. You know that my nature is so that I could not tolerate all this. When this building was projected I said that I will pay whatever you want but get this building constructed fast somehow. And now that it is ready I am very happy. At least something has come up through which attention will get drawn up to the situation of women and people will treat them with at least some love and respect. I do not have to tell you once again about the bad situation of women. But you should see in your individual life that what is the situation of women in your homes. What is the condition of your mother, your sister. And then look around yourself in the society. If you can set it right, your country will really progress a lot and will rise very high.

Where a woman guides and takes care of things, great people are born there. But the way it is happening here through our small effort (of opening this ashram), I hope that something will definitely improve and for what I longed for so many years and was craving to attract the attention of everybody to this aspect of women's situation.In Sahaj Yoga you get to know the Atma. It is alright. But you should have compassion within you towards everybody. If after attaining Atma, you do not have compassion then what is the use? You should have compassion and when you see in the light of compassion then you will really feel pained that these mothers and sisters are stuck up in such a vicious circle. For this I request you that you look around yourself, in your home, outside home and try to see that the situation of women improves. I have just made this very small effort but you people can do a lot more and for this I request you all that the way you love me, same way you love your mothers and sisters.

I bless you infinitely.

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Marathi Chaitanya Lahiri

विश्व निर्मल प्रेम आश्रम, दिल्ली

उद्घाटन सोहळ्याचे प.पू. श्रीमाताजींचे भाषण, दिल्ली २७ मार्च २००३

आजकाल आपल्या देशामध्ये जे अनेक प्रश्न आहेत त्यांच्यामागील महत्त्वाचे कारण म्हणजे आपल्याकडे महिला व पुरुष यांच्याबाबत वेगळा दृष्टिकोन हे मुख्य आहे. ह्या भेदभावाचे कारणच समजत नाहीं. आपल्या शास्त्रांमधें तसे कांहींच सांगितलेले नाहीं; उलट ''यत्र नार्या : पूज्यंते रमंत्रे तत्र देवता: '' असेंच शास्त्रामधें म्हटलेले आहे. तरीही आपल्याकडील परिस्थिति पाहिली तर दिसून येते की महिलांबद्दल आदराची भावना अजिबात बाळगली जात नाहीं. उत्तर प्रदेशांत तर मी स्वत: पाहिले आहे की कुटुंबामधें स्त्रीला कांहींच किंमत दिली जात नाहीं.; त्यांना नोकरासारखेच राबवले जाते. हे कां चालत आले व अजूनही चालले आहे याचे खरे कारण म्हणजे लोक अजून जागृत झालेले नाहींत. घराघरातील स्त्रियांचा असा छळ का केला जातो मला समजतच नाहीं. घराबाहेर हाकलून दिलेल्या स्त्रियांकडे कुणी पाहणारही नाहीं; मुले-बाळे बरोबर पण अगदी निराधार अशा अवस्थेंत त्या असतात.

ह्यावर कांही उपाय आहे का, ही परिस्थिति कशी बदलता येईल याच्यावर मी खूप दिवस विचार करत होते; त्याबद्दल लेख लिहून लोकांना समजावण्याचा प्रयत्न केला तरी नुसते वाचून परिस्थिति सुधारणार नाहीं असे वाटते. म्हणून यासाठीं कांही नियोजनपूर्वक व्यवस्थित अशी कांहीं व्यवस्था करणे आवश्यक आहे. रस्त्यावर बसून भीक मागून दिवस कसाबसा ढकलत असलेल्या दुर्दैवी महिलाही मी पाहते. अशा महिलांबद्दल एक अत्यंत उदासीन अशी प्रवृत्ति आपल्या समाजांत दिसून येते.अशा दुर्दैवी अनेक महिलांना मी प्रत्यक्ष भेटून त्यांच्याशी बोलल्यावरही त्यांना दिल्या जणाऱ्या अशा वागणुकीचे कारण मला दिसले नव्हते. म्हणून मी अशा महिलांसाठीं त्यांच्या निवासाची व उदरभरणाची कांही निश्चित व्यवस्था करण्याचा ठाम निर्णय घेतला होता.

खरे तर स्त्री हाच मानवजातीचा आधारस्तंभ आहे, तिच्यामुळेंच सारा संसार चालत आला आहे. पण त्यांनाच या वेड लागेल अशा परिस्थितीला सामोरे जावे लागत आहे. आणि पदरात मुले असल्याने धीर व आशेच्या जोरावर त्या कसेबसे दिवस काढत आहेत. पैसे मिळवण्याचे काहीच साधन नसल्यामुळें दुसरे कांहीच करण्यासारखी त्यांची स्थिति नाही. मग त्या कुठें जाणार व काय करणार? म्हणून अशा निराधार व बेजार महिलांसाठी एक आश्रम उभा करण्याचे मी ठरवले. या ठिकाणीं त्यांना आश्रय मिळेल, कांही शिक्षण घेतां येईल; छोटे-मोठे व्यवसाय शिकता येईल व त्यांना स्वत:च्या पायावर उभे राहण्याची हिम्मत मिळेल. त्याबरोबरच त्यांना प्रेम मिळेल. त्यांचा कांहीही दोष नसतांना भीक मागत कसेबसे जीवन जगणाऱ्या या असहाय्य महिलांना असा आधार देणें हे सामाजिक कर्तव्यच आहे. ह्या आश्रमाचे काम सुरु झाल्यावर लवकरांत लवकर ते पूर्ण व्हावे अशी माझी इच्छा होती. आतां ते पूर्ण झाले आहे.

सहजयोगी बनल्यावर तुमच्यामधून फक्त प्रेम व करुणेचा पाझर फुटला पाहिजे. हा आश्रम त्याचाच आविष्कार आहे.

या इमारतींचा पांढरा रंग खराब होणार नाहीं अशा खास तऱ्हेने तो बनवला आहे. हा रंग बनवण्याची पध्दत मी इटलीमधे पाहिली व त्याच खास पध्दतीने तो बनवला आहे. तो किती सुंदर दिसत आहे हे तुम्ही पहातच आहात. पाणी, धूळ वगेरे कशानेही तो खराब होणार नाहीं. आपल्या देशात अशी प्रयोगशीलता कमी आहे. पण असा रंग बनवणे कांहीं अवघड नाहीं. मी बऱ्याच लोकांना तो तयार करण्याचे सांगून पाहिले पण कोणी तयार होत नव्हता. जे चालत आले आहे तसेच पुढेही चालवत ठेवण्याची प्रथाच आपल्या लोकांच्या अंगवळणी पडली आहे. आपल्याकडे इतके ज्ञान आहे, मोठमोठे विद्वान-पंडित होऊन गेले पण लोकांना त्याची कांहीच माहिती व किंमत नाहीं. आपण किती महान देशांत जन्माला आलो आहोत याची पण जाण नाहीं. त्याचमुळें स्त्रीची किंमत लोकांना कळत नाहीं; त्यांना अगदी क्षुद्र समजून वाईट वागणूक दिली जाते. नवरे-मंडळी भले दारु पितील पण बायकोला कांहींच सवलती-सोय देणार नाहीं; बायकोच्या घरुन पैसा मिळाला नाहीं तर बिचाऱ्यांना फार त्रास भोगावा लागतो. मग अशा बायका घरींच रडत बसतात नाहीं तर बाहेर पडून खुशाल भीक मागतात. विशेष करुन उत्तर प्रदेशांत या गंभीर प्रश्नाकडे विशेष लक्ष दिले गेले नाहीं. महाराष्ट्रात बरेच समाजसुधारक झाले व त्यांनी खूप चांगले कार्य केले; महिलांसाठी शिक्षणाची सोय झालीं, मुलींची विद्यापीठे निघाली आणि लोकांना महिलांचे गुण लक्षात आले.

तुम्हा लोकांना हीच विनंती आहे की परिस्थिति नीट पाहून आपण काय करु शकतो, शिक्षणक्षेत्रात काय कार्य करावे अशा विषयांबद्दल आम्हाला सूचना करा. वर सांगितलेल्या लाचार महिलांसाठी खास करुन काय करता येईल याचा पण विचार करुन आम्हाला जरुर कळवा. परदेशांत महिलांच्याबाबतीत कायदे कडक असल्यामुळें त्यांचा असा छळ होत नाहीं, त्यांच्या बाबतीत परिस्थिति आपल्या पेक्षा खूप चांगली आहे. आपल्याकडे मात्र उलटी परिस्थिति आहे. मी परदेशांत खूप ठिकाणीं हिंडले आहे व मला हा फरक फार जाणवतो. मुळांतच भारतीय स्त्रीमधें कुटुंबाचे पालन पोषण, दक्षता, मेहनत व प्रेमळ मातृत्वाचे गुण आहेत. पण पुरुष वर्गाकडूनच प्रेम-आदराच्या अभावी त्यांची हेळसांड केली जाते. आता इथल्या महिलाही जागरुक होऊन, संघटित होऊन ही परिस्थिति सुधारण्याची धडपड करत आहेत. पण त्यांच्या प्रयत्नांना म्हणावी तशी दाद मिळत नाहीं.

या सर्वावर उपाय म्हणून आम्ही हा आश्रम बनवला आहे. या आश्रमांत ज्या महिला वा मुली येतील त्यांना आपल्या पायावर उभे राहण्याचे ज्ञान दिले जाईल; त्याचबरोबर त्यांना सहजयोगही मिळेलच. त्यांनी सहजयोग आत्मसात केला तर अभिमान व गौरवपूर्वक जीवनही त्यांना प्राप्त होईल. इथें अनेक कला, पाककला व इतर उच्च दर्जाचे शिक्षण देण्याची व्यवस्था करता येईल. त्या दृष्टीने इथें येणाऱ्या महिलांची क्षमता व तयारी लक्षांत घेतली जाईल. आपल्याला त्यांना नुसते कामाला न जुंपता त्यांना मदत करावी लागेल, त्यांच्यावर लक्ष द्यावे लागेल. समाजाला आजकाल जी अनिष्ट व हानीकारक कीड लागली आहे ती दूर करण्याचा कसोशीने प्रयत्न आपल्याला करायचा आहे. तसेच महिलांबद्दल आपल्या हृदयात श्रध्दा आली पाहिजे; त्याच्या अभावामुळेंच माणसे बायकांना त्रास देत राहतात व मारपीटही करतात. माझ्या माहितीमधे अशा दुर्दैवी महिलांच्या इतक्या करुण कहाण्या आहेत की त्या सांगत बसले तर तुम्हालाही रडूं येईल. मी पण त्या ऐकून खूप रडले आहे व म्हणूनच मी हा मार्ग निवडला आहे. सुरवातीला हा लहानसा प्रयत्न आहे पण काहीं काळानंतर तो वाढणार आहे; इथें आलेल्या महिला ठीक होऊनच बाहेर पडणार आहेत; स्वतःच्या पायावर उभे राहून स्वतःला व स्वतःच्या मुलाबाळांना त्या नीट सांभाळतील व जीवनांत स्वाभिमानपूर्वक यश संपादन करतील; हे करण्याची आजकाल अत्यंत आवश्यकता आहे. त्या अभागी असल्या तरी मानव आहेत व मानवजन्माचा गौरव त्यांना मिळवून देण्याचे हे कार्य आहे. तुम्ही लोकांनीही आपापल्या कुटुंबियांकडे याच दृष्टिकोनातून पहा व आपलेही कांही चुकत नाहीं ना हे तपासून पहा.

मी मुद्दामहून परदेशी योगी असूनही हिंदीत बोलत आहे, कारण त्यांच्यासमोर आपल्याच देशातील लोकांची निंदा करण्यात संकोच वाटतो. त्यांना आपापल्या देशाचा अभिमान आहेच, पण तरीहि इथें आले की इथल्या जमिनीला डोके लावून भूमातेचा आदर करतात. ही त्यांचीच इच्छा व श्रध्दा आहे. मी सांगितले

म्हणून असे करतात असे मुळीच नाही, म्हणून आपल्याकडील महिलांची दुर्दशा मी त्यांच्या समोर सांगत नाही.पण आपल्या समाजातील ही कीड आपणच दूर केली पाहिजे; व आपल्या महिला भगिनींचा मान आपण राखला पाहिजे; त्यांच्याबद्दल श्रध्दा ठेवली पाहिजे. म्हणजे त्यांची गुलामगिरीतून सूटका होईल. तसे केले नाहीं तर त्या महिलांना भोगावा लागणारा छळवाद पुरुषांनाही शाप देईल. ही परिस्थिती सुधारली तर आताची मुलेही सुधारतील.

ह्या आश्रमाची ही वास्तू उभी राहिल्याचे बघून मला फार आनंद होत आहे. इथें येणाऱ्या महिलांनाही आधार, प्रेम व आदरच मिळणार आहे. या कार्यामुळें आपला देशही अत्यंत उन्नत होणार आहे. या आश्रमाच्या कार्याबद्दल मला खूप आशा आहेत. ज्या परिस्थितीबद्दल मी इतकी वर्षे खंत बाळगून होते ती बदलण्याचा हा प्रयत्न आहे. सहजयोगात येऊन तुम्ही आत्मा जाणला आहे व आता सर्वांबद्दल, सर्व बाबतीत तुमची दृष्टि करुणामय झाली पाहिजे. मग अशा पीडित व दुदैवी महिलांना मदत करण्यांत तुम्हाला धन्यता वाटेल. हा छोटासा प्रयत्न असला तरी मी तुम्हा सर्वांना विनंती करते की माझ्यावर जसे प्रेम करता तसेच प्रेम आपल्या माता-भगिनींवर करा.

सर्वांना अनंत आशीर्वाद.